NIOS PYQ's SOLUTIONS

PREVIOUS YEARS' QUESTIONS & ANSWERS

APRIL-2024

Your Path to Success

खण्ड - अ

प्रश्न 1 - भीमबेटका गुफाएँ कहाँ स्थित हैं?

(A) गुजरात

(B) पंजाब

(C) भोपाल

(D) बिहार

उत्तर - (C) भोपाल

प्रश्न 2 – विश्वरूप-I पेंटिंग की शैली क्या है?

(A) बसोली

(B) गुलेर

(C) काँगड़ा

(D) चंबा

उत्तर – (D) चंबा

प्रश्न 3 – निम्नलिखित में से किस गुफा में कलाकृति 'मारा विजया' स्थित है?

(A) गुफा 9

(B) गुफा 1

(C) गुफा 16

(D) गुफा 17

उत्तर - (B) गुफा 1

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 4 – किस वर्ष जे० कॉकबर्न ने केन नदी घाटी में गैंडों की जीवाश्म हड्डियों की खोज की?

(A) 1881 **(B) 1891**

(C) 1851 **(D) 1872**

उत्तर – (A) 1881

प्रश्न 5 - निम्नलिखित चित्रों में से किसे चित्रकला की गीतात्मक शैली कहा जाता है?

(A) मुगल चित्रकला

(B) पहाड़ी चित्रकला

(C) कंपनी स्कूल ऑफ पेंटिंग

(D) राजस्थानी चित्रकला

उत्तर - (B) पहाड़ी चित्रकला

प्रश्न 6 - 'राजकुमार और राजकुमारी' किस गुफा में स्थित है?

(A) गुफा 18

(B) गुफा 14

(C) गुफा 16

(D) गुफा 17

उत्तर – (D) गुफा 17

Or / अथवा

'भालू, बाघ और पक्षी' कार्य का माध्यम क्या है?

(A) भित्तिचित्र **(B) अँगूठे का मुद्रण**

(C) कैन्वस पर ऐक्रेलिक **(D) जलरंगनिर्मित चित्र**

उत्तर – (B) अँगूठे का मुद्रण

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 7 - पेंटिंग 'पद्मपाणि बोधिसत्त्व' के लिए सही अवधि का चयन कीजिए।

(A) दूसरी-छठी सी० सी० ई० **(B) पाँचवीं-नौवीं सी० सी० ई०**

(C) प्रथम-दूसरी सी० सी० ई० **(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं**

उत्तर – (B) पाँचवीं-नौवीं सी० सी० ई०

Or / अथवा

लोक और जनजातीय कला में एक टहनी को ____________ में बदल दिया जाता है।

A) रंगपट्टिका **(B) लोटा**

(C) तूलिका **(D) रंग**

उत्तर – (C) तूलिका

प्रश्न 8 - फ्रेस्को पेंटिंग किस पर निष्पादित किए जाते हैं?

A) ताजा प्राइमेड कैन्वस **(B) गीला चूना प्लास्टर**

(C) लिनेन का कपड़ा **(D) हस्तनिर्मित शीट**

उत्तर – (B) गीला चूना प्लास्टर

खण्ड – ब

नीचे दिए गए परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए (प्रश्न संख्या 9-12) :

भारत की प्रागैतिहासिक चित्रकला

शैल चित्र या प्रारंभिक पाषाण युग के चित्र जादुई और अद्वितीय हैं। यह भारत में मानव सभ्यता के कला इतिहास के सबसे पुराने रूपों में से एक था जो पुरापाषाण काल या पुराने पाषाण युग में शुरू हुआ था, लगभग 2.5 मिलियन साल पहले 10000 ईसा पूर्व तक। पुरापाषाण काल में, प्रारंभिक मानव गुफाओं में रहते थे और अपने जीवन को बचाने के लिए पक्षियों और जंगली जानवरों के शिकार के लिए पत्थर का इस्तेमाल करते थे। प्रारंभिक पुरुषों ने लगभग 40000 साल पहले पुरापाषाण युग के दौरान गुफाओं की दीवारों पर पेंटिंग और ड्राइंग शुरू की। वर्तमान समय से लगभग 12000 साल पहले मेसोलिथिक काल से कई चित्र पाए गए थे। वह अवधि भारत में प्रागैतिहासिक कला की सबसे पुरानी खोज थी।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 9 – _________ को भारत में मानव सभ्यता के कला इतिहास के सबसे पुराने रूपों में से एक माना जाता है।

उत्तर – शैल चित्रकला

प्रश्न 10 – प्रारंभिक पाषाण युग किस काल में शुरू हुआ था?

उत्तर – पुरापाषाण काल

प्रश्न 11 – प्रारंभिक मनुष्य गुफाओं में रहते थे और पक्षियों का शिकार करने के लिए __________ का इस्तेमाल करते थे।

उत्तर – पत्थर

प्रश्न 12 – मेसोलिथिक की समय अवधि वर्तमान समय से लगभग ___________ साल पहले है।

उत्तर – 12000 वर्ष

रिक्त स्थान भरिए (प्रश्न संख्या 13-16) :

प्रश्न 13 – गोंड पेंटिंग __________ राज्य का एक प्रसिद्ध कला-रूप है।

उत्तर – मध्य प्रदेश

प्रश्न 14 – मधुबनी पेंटिंग ___________ राज्य का एक प्रसिद्ध कला-रूप है।

उत्तर – बिहार

प्रश्न 15 – पट्टचित्र ___________ राज्य का एक प्रसिद्ध कला-रूप है।

उत्तर – ओडिशा

प्रश्न 16 – वारली पेंटिंग __________ राज्य का एक प्रसिद्ध कला-रूप है।

उत्तर – महाराष्ट्र

नीचे दिए गए परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए (प्रश्न संख्या 17-20) :

भारतीय कला में फ्रेस्को और टेम्परा

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रागैतिहासिक काल में मनुष्य प्रकृति पर बहुत निर्भर था। दुनिया भर में पाए गए उस काल के रॉक चित्रों में मानव आकृतियों को एक जानवर का शिकार करते हुए, एक-दूसरे के साथ युद्ध में, क्लब और प्रोजेक्टाइल ले जाते हुए, और आंदोलन में नृत्य और जानवरों की आकृतियों के साथ जीत का जश्न मनाते हुए दिखाया गया है। उस समय, ये चित्र जानवरों को देवताओं के रूप में दर्शाते हैं। भारत में, प्रागैतिहासिक शैलचित्रों का प्रकाश तब आया जब भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के आर्चीबाल्ड कार्लाइल ने 1867 और 1868 में उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले के सोहागीहाट में पाषाण युग से संबंधित शैलचित्रों की खोज की। ये चित्र आज उन लोगों के जीवन में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, जिन्होंने उन्हें चित्रित किया था। 1881 में जे० कॉकबर्न को मिर्जापुर क्षेत्र में केन नदी की घाटी में गैंडों की हड्डियों के जीवाश्म मिले साथ ही रोप गाँव के पास एक आश्रय में तीन पुरुषों द्वारा शिकार किए गए गैंडे की एक पेंटिंग भी मिली। 1924 में, सर जॉन मार्शल, राय बहादुर दया राम साहनी, माधो सरूप वत्स, राखाल दास बनर्जी और ई० जे० एच० मैके ने रावी और सिंधु नदी के तट पर खुदाई का नेतृत्व किया, जिससे हजारों साल पुरानी सभ्यता की खोज हुई। इन स्थलों पर पाई जाने वाली मुहरों, सिक्कों, प्रतिमाओं और टेराकोटा में जानवरों की आकृतियाँ चित्रित या नक्काशी की गई हैं।

प्रश्न 17- दुनिया भर में पाए जाने वाले प्रागैतिहासिक काल के रॉक चित्र ___________ दिखाते हैं।

उत्तर – शिकार, युद्ध, नृत्य तथा पशु आकृतियाँ

प्रश्न 18- भारत में, प्रागैतिहासिक शैलचित्रों की खोज _________ द्वारा की गई थी।

उत्तर – आर्किबाल्ड कार्लाइल

प्रश्न 19- 1881 में _________ को मिर्जापुर क्षेत्र में केन नदी की घाटी में गैंडों की हड्डियों के जीवाश्म मिले।

उत्तर – जे. कॉकबर्न

प्रश्न 20- _____________ के तट से विभिन्न चित्रित या नक्काशीदार कलाकृतियाँ मिली हैं।

उत्तर – सिंधु और रावी नदी

OR / अथवा

शैलचित्र जानवरों को ___________ के रूप में दर्शाते हैं।

उत्तर – देवताओं

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

खंड – स

प्रश्न 21- सिंधु के बर्तनों में पाए जाने वाले जानवरों के रूपों पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर – सिंधु बर्तनों पर लाल लेप पर काले रंग से कूबड़ वाले बैल, हिरण, मछली और मोर के चित्र बने हैं। ये आकृतियाँ स्वाभाविक और सजीव हैं, जिन्हें अक्सर ज्यामितीय पैटर्न और वनस्पतियों के साथ सजावटी रूप में चित्रित किया गया है।

प्रश्न 22- भारत में कंपनी चित्रकला के विकास के बारे में लिखिए।

उत्तर – 18वीं-19वीं सदी में ब्रिटिश अधिकारियों के संरक्षण में कंपनी शैली विकसित हुई। यह भारतीय और यूरोपीय कला का संगम थी। इसमें कलाकारों ने जलरंग और यथार्थवादी तकनीक छाया-प्रकाश का प्रयोग कर भारतीय जनजीवन, मेलों और पशु-पक्षियों का सजीव चित्रण किया।

प्रश्न 23- पेंटिंग 'जर्नी एंड' की व्याख्या कीजिए।

उत्तर – 'जर्नी एंड' अवनीन्द्रनाथ टैगोर की प्रसिद्ध कृति है। वॉश तकनीक में बने इस चित्र में भारी बोझ से दबे एक गिरते हुए ऊंट को दिखाया गया है। लाल-भूरे रंग और ऊंट की वेदना जीवन के अंत और संघर्ष को मार्मिक रूप से दर्शाते हैं।

OR / अथवा

'भीमबेटका शैलचित्रों' की विशिष्ट विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – भीमबेटका के चित्रों में आदिमानव के दैनिक जीवन, जैसे शिकार और नृत्य, का सजीव चित्रण है। इसमें लाल गेरू और सफेद खनिज रंगों का प्रयोग हुआ है। इसकी विशिष्टता रेखीय आकृतियाँ और जानवरों की गतिशीलता को दर्शाना है।

प्रश्न 24- राजा रवि वर्मा पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। उनकी कलाकृति 'सुभद्रा का अपहरण' की व्याख्या कीजिए।

उत्तर – राजा रवि वर्मा को आधुनिक भारतीय चित्रकला का जनक माना जाता है। उन्होंने भारतीय पौराणिक कथाओं को यूरोपीय यथार्थवादी शैली तैल रंग में चित्रित कर जन-जन तक पहुँचाया।उनकी कृति 'सुभद्रा का अपहरण' महाभारत का एक गतिशील दृश्य है। इसमें अर्जुन को सुभद्रा को बलपूर्वक रथ पर ले जाते हुए दिखाया गया है। चित्र में पात्रों के हाव-भाव, वस्त्रों की सिलवटें और रथ की गति अत्यंत सजीव और नाटकीय हैं, जो उनकी यथार्थवादी कला का बेजोड़ नमूना है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

OR / अथवा

पेंटिंग 'पैलन्कीन' का वर्णन कीजिए।

उत्तर – 'पैलन्कीन' (पालकी) कंपनी शैली (पटना कलम) का एक उत्कृष्ट चित्र है। इसमें कहारों के एक समूह को पालकी ले जाते हुए अत्यंत यथार्थवादी तरीके से दर्शाया गया है।इस चित्र में यूरोपीय तकनीक, विशेषकर छाया-प्रकाश और परिप्रेक्ष्य का सुंदर प्रयोग हुआ है। पटना शैली की विशेषता के अनुसार, इसमें पृष्ठभूमि सादी है, जिससे दर्शकों का पूरा ध्यान आकृतियों पर रहता है। यह 19वीं सदी के भारतीय जनजीवन का एक सजीव दस्तावेज है।

प्रश्न 25- "अमृता शेरगिल के चित्र चित्रकला के पश्चिमी तरीकों के एक मजबूत प्रभाव को दर्शाते हैं।" उनके विषयों और चित्रों के नामों का समर्थन करने वाले दिए गए कथन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर – अमृता शेरगिल की कला पश्चिमी तकनीक और भारतीय आत्मा का अद्वितीय संगम है। पेरिस में शिक्षित होने के कारण, उनकी शैली पर पॉल गाउगिन और आधुनिक यूरोपीय कला का गहरा प्रभाव था। यह उनके तैल रंगों के प्रयोग, बोल्ड स्ट्रोक्स और ठोस आकृतियों में स्पष्ट दिखाई देता है।

उदाहरण के लिए :

1. **'तीन बहनें' :** इसमें युवतियों की वेशभूषा भारतीय है, लेकिन रंगों का संयोजन और चेहरे के भाव पश्चिमी शैली से प्रभावित हैं।
2. **'पहाड़ी औरतें' :** आकृतियों की सरलता और बनावट आधुनिक यूरोपीय शैली को दर्शाती है।
3. **'वधु का श्रृंगार' :** यह एक पारंपरिक भारतीय विषय को यूरोपीय यथार्थवादी नजरिए से प्रस्तुत करता है।

OR / अथवा

भीमबेटका रॉक पेंटिंग और अजंता गुफा पेंटिंग की पेंटिंग शैलियों के बीच अंतर कीजिए।

उत्तर – भीमबेटका और अजंता की चित्रकला शैलियों में मौलिक अंतर है :

काल और विषय : भीमबेटका प्रागैतिहासिक काल की है, जिसका मुख्य विषय आदिमानव का दैनिक जीवन शिकार, नृत्य है। वहीं, अजंता ऐतिहासिक काल गुप्त की शास्त्रीय कला है, जो बौद्ध धर्म और जातक कथाओं पर केंद्रित है।

तकनीक और शैली : भीमबेटका में सपाट और रेखीय आकृतियाँ हैं, जिनमें सीमित खनिज रंगों गेरू-सफेद का प्रयोग हुआ है। इसके विपरीत, अजंता शैली अत्यंत परिष्कृत है। इसमें लयात्मक रेखाओं, छाया-प्रकाश द्वारा उभार और शारीरिक सौंदर्य का यथार्थवादी चित्रण किया गया है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

भीमबेटका जहाँ 'प्रतीकात्मक और आदिम' है, वहीं अजंता 'सजावटी और भावपूर्ण' है।

प्रश्न 26- पहाड़ी चित्रकला की किन्हीं दो शैलियों के बारे में लिखिए। चित्रकला की शैलियों की विषय-वस्तु और विशिष्ट विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – पहाड़ी चित्रकला की दो प्रमुख शैलियाँ बसोली और काँगड़ा हैं :

1. **बसोली शैली :** बसोली शैली उत्तर भारत की सबसे पुरानी पहाड़ी चित्रकला शैली है। इसमें चमकीले और गहरे रंगों (जैसे लाल, पीला) का प्रयोग होता है। चेहरे की बनावट में विशाल नेत्र और तीव्र रेखाएं प्रमुख हैं। विषयवस्तु में भानुदत्त की 'रसमंजरी', 'गीत गोविंद' और वैष्णव धर्म के चित्र शामिल हैं।
2. **काँगड़ा शैली :** काँगड़ा शैली पहाड़ी चित्रकला की विकसित और प्रसिद्ध शैली है। इसे 'रंगों का काव्य' कहा जाता है। इसमें कोमल रंग, लयात्मक रेखाएं और नारी सौंदर्य का नाजुक चित्रण मिलता है। मुख्य विषय राधा-कृष्ण का प्रेम, भागवत पुराण और नायक-नायिका भेद हैं।

OR / अथवा

चित्रों के विषय और विशिष्टता को समझाते हुए काँगड़ा कला पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर – काँगड़ा शैली उत्तर भारत की पहाड़ी चित्रकला की सबसे विकसित और प्रसिद्ध शैली है। इसे 'रंगों का काव्य' कहा जाता है क्योंकि इसमें रंगों का सौंदर्य और कोमलता प्रमुखता से देखने को मिलती है। इस शैली की खासियत लयात्मक रेखाएं, नाजुक चित्रण और नारी सौंदर्य का सुंदर अभिव्यंजन है। चित्रों में भावपूर्ण और सुंदर अभिव्यक्ति होती है। मुख्य विषय राधा-कृष्ण का प्रेम, भागवत पुराण की कथाएँ और नायक-नायिका भेद हैं। यह शैली भाव और सौंदर्य को संयोजित करते हुए दर्शक के मन में एक धार्मिक और सांस्कृतिक अनुभूति उत्पन्न करती है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

NIOS PYQ's SOLUTIONS

PREVIOUS YEARS' QUESTIONS & ANSWERS

OCTOBER-2024

Your Path to Success

खंड - अ

नीचे प्रश्न के सही उत्तर चुनें।

प्रश्न 1. मध्य प्रदेश में भोपाल के पास स्थित गुफाओं के नाम बताइए।

(A) बादामी **(B) अमरनाथ**

(C) भीमबेटका **(D) बोर्रा**

उत्तर – (C) भीमबेटका

प्रश्न 2. पाल लघु चित्रकला के शुरुआती उदाहरण बौद्ध ग्रंथों की ____________ पांडुलिपियों से हैं।

(A) ताड़ का पत्ता **(B) केले का पत्ता**

(C) पीपल लीफ **(D) भोज का पत्ता**

उत्तर – (A) ताड़ का पत्ता

प्रश्न 3. मिर्जापुर क्षेत्र में गैंडे के ड्रोन का जीवाश्म किसने पाया?

(A) ई.जे.एच मैक के **(B) जे. कॉकबर्न**

(C) सर जॉन मार्शल **(D) कार्लाइल**

उत्तर – (B) जे. कॉकबर्न

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किसका उपयोग मुद्रण हेतु ब्लॉक बनाने में नहीं किया जाता है?

(A) मोम **(B) साबुन**

(C) टूथपेस्ट **(D) रबड़**

उत्तर – (C) टूथपेस्ट

प्रश्न 5. निम्नलिखित में से कौन सी मुद्रण तकनीक नहीं है?

(A) लिनोकट **(B) मुद्रांकन**

(C) वुडकट **(D) वॉश**

उत्तर – (D) वॉश

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 6. ग्लौकोनाइट से प्राप्त रंग वर्णक का नाम बताइए।

(A) हरा **(B) नीला**

(C) लाल **(D) पीला**

उत्तर – (A) हरा

प्रश्न 7. कलमकारी शब्द निम्नलिखित में से किस भाषा से लिया गया है?

(A) उर्दू **(B) तमिल**

(C) मलयालम **(D) फ़ारसी**

उत्तर – (D) फ़ारसी

प्रश्न 8. लोक एवं जनजातीय कला में एक टहनी को निम्नलिखित में से किसमें बदल दिया जाता है?

(A) पैलेट **(B) डब्बा**

(C) ब्रश **(D) रंग**

उत्तर – (C) ब्रश

खंड – ब

प्रश्न 9. गद्यांश को पढ़ें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

अवतरण -1: अजंता की गुफाएँ : सबसे प्रसिद्ध चित्रकारी अजंता की गुफाओं में पाई जाती हैं। अजंता की गुफाएँ महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद जिले से साठ मील उत्तर पूर्व में ताप्ती नदी की एक छोटी सहायक नदी वाघोरा के घुमावदार बिस्तर पर स्थित हैं। गुफाओं का नाम पास के गाँव अजिंता के नाम पर रखा गया है। अजंता की गुफाएँ एक चट्टानी पहाड़ी तक फैली हुई हैं जो लगभग 260 फीट ऊँची है और 540 गज के विस्तार के साथ अपने किनारों से काटी गई है। वहाँ तीस गुफाएँ हैं, जिनमें एक अधूरी है। गुफाएं 9, 10, 19, 26 और 29 चैत्य हॉल (पूजा स्थल) हैं। अन्य का उपयोग विहार (मठ) के रूप में किया जाता था जहाँ भिक्षु रहते थे। अजंता की गुफाओं की खोज 1819 में मद्रास रेजिमेंट के कुछ अधिकारियों ने की थी। इनमें से एक मेज़र जॉन स्मिथ थे। अजंता की गुफाओं पर पहली रिपोर्ट 1824 में लेफ्टिनेंट जे.ई. एलेक्जेंड्रा द्वारा रॉयल एशियाटिक सोसाइटी को भेजी गई थी।

(a) अजंता गुफाओं का नाम ______________ गाँव के नाम पर रखा गया है।

उत्तर – अजंता गुफाओं का नाम **अजिंता** गाँव के नाम पर रखा गया है।

(b) अजंता में कुल कितनी गुफाएँ पाई जाती हैं?

उत्तर – अजंता में कुल तीस गुफाएँ पाई जाती हैं।

(c) मद्रास रेजिमेंट के अधिकारियों ने अजंता की खोज ______________ वर्ष में की थी।

उत्तर – मद्रास रेजिमेंट के अधिकारियों ने अजंता की खोज **1819** वर्ष में की थी।

(d) ______________ सोसायटी ने अजंता पर पहली रिपोर्ट भेजी।

उत्तर – रॉयल एशियाटिक सोसायटी ने अजंता पर पहली रिपोर्ट भेजी।

प्रश्न 10. गद्यांश को पढ़ें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

गद्यांश -2: भित्ति चित्रों का इतिहास : कला का इतिहास, एक तरह से, मानव जाति की आकांक्षाओं और मूल्यों का दस्तावेज है। जैसा कि शैल चित्रों से स्पष्ट है, मनुष्य 30,000 से अधिक वर्षों से चित्रकारी कर रहा है। आदिम विषयों और तकनीकों से शुरू होकर, भित्ति चित्र कला (भित्ति चित्र, किसी भी कलाकृति को चित्रित किया जाता है या सीधे दीवार, छत या किसी अन्य बड़ी स्थायी सतह पर लगाया जाता है।) मानव जाति के साथ विकसित हुई। शिकार के दृश्य को दर्शाने वाले शुरुआती शैल चित्रों से अजंता, एलोरा, बाघ, बादामी और सीतालवासल (100 ई .- 600 ई.) के प्राचीन भित्ति चित्रों से लेकर समकालीन दीवार कला तक, भित्ति चित्र कला ने वास्तव में एक लंबा सफर तय किया है। भित्ति कला में अब बड़े पैनल शामिल हैं जिन्हें बाद में दीवार या छत पर स्थायी रूप से चिपका दिया जाता है। इसके मुख्य माध्यम फ्रेस्को, टेम्परा, तेल रंग, जल रंग, उत्कीर्णन और कांच हैं। मुद्रण एक सदियों पुरानी तकनीक है जिसकी जड़ें लोक कला में हैं।

(a) कितने वर्षों से मनुष्य चित्रित कर रहा है?

उत्तर – 30,000

(b) ______________ में किसी भी कलाकृति को दीवार या छत पर सीधे चित्रित या लगाया जाता है।

उत्तर – भित्ति चित्र में किसी भी कलाकृति को दीवार या छत पर सीधे चित्रित या लगाया जाता है।

(c) मुद्रण कला की जड़ें किस कला पर आधारित हैं?

उत्तर – लोक कला

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

(d) प्राचीन भित्तिचित्रों से लेकर ____________ तक भित्तिचित्रों ने एक लम्बा सफर तय किया है।

उत्तर – प्राचीन भित्तिचित्रों से लेकर **समकालीन दीवार कला** तक भित्तिचित्रों ने एक लम्बा सफर तय किया है।

प्रश्न 11. गद्यांश को पढ़ें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

गद्यांश -3: लोक कला : लोक कला एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र के लोगों की कला है। इस प्रकार, भारत में लोक कला और आदिवासी कला का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि भारत का इतिहास। भारत की वारली आदिवासी चित्रकला महाराष्ट्र के ठाणे जिले के दहानू और जव्हार क्षेत्रों के वारली लोगों द्वारा फसल कटाई और शादियों का जश्न मनाने के लिए बनाई जाती है, यह आदिवासी भारतीय कला रूप अपने लोगों के बीच इसके चित्रकारों के नाम से जाना जाता है। वारली चित्रकला की विशेषता इसका सरल, प्राकृतिक और प्राचीन रूप है। ये पेंटिंग पूरे देश में पाई जाने वाली प्रागैतिहासिक गुफा चित्रों के समान हैं। शीर्ष पर दो त्रिकोणों को मिलाकर मानव और पशु रूप बनाए जाते हैं। ये अलंकृत, अविस्तृत आकृतियाँ शानदार रूप से गतिशील और सामंजस्यपूर्ण हैं। पेंटिंग आम तौर पर वारली के परिवेश और जीवन का प्रतिनिधित्व करती हैं। वारली चित्रकला पारंपरिक रूप से दीवालों पर बनाई जाती हैं। परंतु आजकल शहरीं मार्केट के लिए वारली चित्रकला को कागज और कपड़े पर भी बनाया जाता है।

(a) वारली जनजातीय चित्रकला ____________ और ____________ के लोगों द्वारा बनाई जाती है।

उत्तर – वारली जनजातीय चित्रकला **ठाणे** और **जव्हार** के लोगों द्वारा बनाई जाती है।

(b) वारली चित्रकला किस कला रूप के समान है?

उत्तर – गुफा चित्रों

(c) मानव और पशु आकृतियाँ किन दो आकृतियों को मिलाकर बनाई गई हैं?

उत्तर – दो त्रिकोणों

(d) वारली चित्रकला पारंपरिक रूप से किस सतह पर की जाती है?

उत्तर – दीवालों

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

खंड – स

प्रश्न 12. "ए कॉमन इंडियन नाइटजार बर्ड" पेंटिंग के बारे में बताएं।

उत्तर – "ए कॉमन इंडियन नाइटजार बर्ड" (साधारण भारतीय चकोर चिड़िया) पेंटिंग :

"ए कॉमन इंडियन नाइटजार बर्ड" पेंटिंग 18वीं सदी में कंपनी शैली में बनी है, जिसमें भारतीय चकोर चिड़िया का सूक्ष्म और सजीव चित्रण किया गया है। यह फ्रांसीसी योद्धा क्लाउड मार्टिन के संग्रह का एक प्रमुख चित्र है। यह चित्र कागज पर जलरंग से बनाया गया है।

- इस पेंटिंग में चित्रकार ने महीन विवरणों पर विशेष ध्यान दिया है। चिड़िया के हर पंख को बहुत बारीकी से बनाया है। काले और भूरे रंगों की अनेक छटाओं का प्रयोग करके चिड़िया के शरीर पर बने धब्बों और निशानों को सुंदरता से दिखाया गया है। आंखों को घेरते हुए एक चमकीला घेरा दर्शाया गया है और पैरों की सतह का खुरदरापन दिखाने के लिए समानांतर रेखाएं दोहराई गई हैं।

प्रश्न 13. कंपनी स्कूल शब्द से आप क्या समझते हैं? इससे जुड़ी किसी एक पेंटिंग का नाम बताइए।

उत्तर – कंपनी स्कूल : कंपनी स्कूल से तात्पर्य ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासनकाल में विकसित हुई एक विशिष्ट चित्रकला शैली से है। यह शैली मुख्य रूप से 18वीं और 19वीं शताब्दी में भारत में फली-फूली। इस चित्रकला का विकास ब्रिटिश अधिकारियों, व्यापारियों और भारत आए यूरोपीय लोगों की मांग पर हुआ, जो भारतीय दृश्यों, रीति-रिवाजों, वेशभूषा, स्थापत्य और वन्यजीवन को चित्रों के माध्यम से संजोना चाहते थे।

- **कंपनी स्कूल की पेंटिंग का नाम :** बाज़ार का दृश्य

प्रश्न 14. 'कल्पसूत्र' की प्रसिद्ध पेंटिंग के बारे में एक नोट लिखें।

उत्तर – कल्पसूत्र की प्रसिद्ध पेंटिंग :

'कल्पसूत्र' श्वेतांबर जैन समुदाय का पवित्र ग्रंथ है। कल्पसूत्र की पेंटिंग जैन ताड़पत्र चित्रणकला का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें भगवान महावीर के जीवन प्रसंगों का चित्रण किया गया है। कल्पसूत्र पेंटिंग में दो भाग हैं- एक तरफ एक देवता है, जिसका सिर पशु जैसा और शरीर मानव का है, और वह एक शिशु को पकड़े हुए है। दूसरी तरफ, एक रानी अपने नवजात शिशु के साथ पलंग

पर लेटी हुई है। इस शैली में सजीव रंगों, बारीक रेखांकन और सजावट का सुंदर संयोजन है, जो ताड़पत्र पर बारीकी से उकेरी गई कहानियों को जीवंत करता है।

अथवा

प्रसिद्ध अजंता गुफा चित्रकला "अप्सरा" के बारे में एक नोट लिखें।

उत्तर – अप्सरा नामक चित्र अजंता में चित्रकारों द्वारा बनाई गई एक श्रेष्ठ कृति है। इसमें अप्सरा का शरीर गहरे भूरे रंग का बनाया गया है। उसके सिर पर एक अलंकृत पगड़ी, गले में मोतियों के हार तथा कानों में कुण्डल के आकार की बालियाँ हैं। उसने अपने दोनों हाथों में वाद्ययंत्र लिया है। अपनी कलाइयों में सुंदर ढंग से उत्कृष्ट कड़े पहने हुए हैं। उसके स्वप्निल नेत्र अधखुले हैं।

प्रश्न 15. मध्यकाल में 'जैन चित्रकला' के विकास के बारे में वर्णन कीजिए।

उत्तर – मध्यकाल में जैन चित्रकला का विकास मुख्य रूप से गुजरात, राजस्थान, बिहार और बंगाल में हुआ। जैन लघुचित्र ताड़पत्रों और बाद में कागज पर बनाए गए, जिनमें जैन धर्मग्रंथों, विशेषकर 'कल्पसूत्र' की कथाओं को चित्रित किया गया। इन चित्रों की पहचान उनकी चमकदार रंग योजना और बड़ी, उभरी हुई आंखों से होती थी।

- गुजरात में जैन लघुचित्रकला को संरक्षण मिला। ताड़पत्रों को धागों से बांधकर लकड़ी के आवरण में रखा जाता था, जिनके अंदरूनी हिस्सों को भी सुंदर चित्रों से सजाया जाता था।
- इन चित्रों की शैली सरल और स्पष्ट थी, जिसमें सुलेख और चित्रण के लिए स्थान को समान रूप से बांटा जाता था। यह कला आगे चलकर दीवार चित्रकला और स्थानीय लोक कला शैलियों से भी प्रभावित हुई।

अथवा

'पालकी' पेंटिंग की रचनात्मक सुंदरता के बारे में लिखिए।

उत्तर – 'पालकी' पेंटिंग : पालकी पेंटिंग जो कि कंपनी शैली में बनाया गया हैं। इस चित्र में एक सज्जन पुरुष को संदूक जैसे आकार की पालकी में बैठे हुए दिखाया गया है ।

'पालकी' पेंटिंग की रचनात्मक सुंदरता :

- 'पालकी' पेंटिंग की रचनात्मक सुंदरता में कलाकार ने महीन-से-महीन विवरण पर ध्यान दिया हैं। इस पेंटिंग में पालकी उठाए चार कहार चित्रित हैं; जो सफेद कुर्ता, पीली एवं भूरी धोती तथा सिर पर नीली पगड़ी पहने

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

हैं। वे कमर में एक लाल कपड़ा लपेटे हैं। वे पालकी का भार उठाए तालबद्ध गति (समान गति) से चल रहे हैं।

- पालकी को सौंदर्यपूर्ण ढंग से बनाया गया है, जिसमें लकड़ी की नक्काशी और छतरी का डिजाइन उत्कृष्ट है। जो उस समय की शिल्पकला को दर्शाता है। पालकी में तकिए का सहारा लेकर बैठे सज्जन पुरुष के कपड़ों एवं उनके डिज़ाइनों पर प्रमुख रूप से ध्यान दिया गया है।
- पालकी और उसे उठाए कहारों की परछाइयों से भूमि का आभास होता है। पालकी के ज्यामितीय आकार का रेखांकन महीन रेखाओं की सहायता से अत्यंत सटीकता से किया गया है।
- पात्रों के हावभाव और गतिशीलता को बखूबी उकेरा गया है, जिससे यात्रा की थकान और कर्तव्य दोनों झलकते हैं।

विकल्प की जांच करें और सभी प्रश्नों का प्रयास करें (उत्तर न्यूनतम 90 शब्दों में दें)

प्रश्न 16. प्रासंगिक उदाहरणों की सहायता से शैल कला के विभिन्न प्रकारों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर – शैल कला के विभिन्न प्रकार निम्नलिखित हैं :

1) मिर्जापुर के शैलचित्र कला : इन गुफाओं की छतों तथा दीवारों पर आदिमानव द्वारा चित्रकारी की गई थी। चित्रों में अनेक पशु; जैसे-हाथी, शूकर और बाघ आदि की प्रजातियाँ दर्शाई गई हैं। अनेक जंगली जानवरों के साथ पालतू पशु भी चित्रित किए गए हैं।

उदाहरण : आदिम शिकारी चित्र - इन चित्रों में दर्शाए गए शिकार-दृश्य उनके जीवन के व्यावहारिक अनुभवों का प्रतिनिधित्व करते हैं। चित्र में यह दर्शाया गया है कि लोगों का एक समूह पशुओं का पीछा कर रहा है तथा उन्हें पुराने हथियारों से मारने हेतु घेर रहा है।

2) पचमढ़ी के शैलचित्रकला : पंचमढ़ी शब्द **"पंच-मढ़ी"** से बना है जिसका अर्थ है- **पाँच गुफाओं का समूह,** जहाँ पाँच पांडवों ने कुछ समय निवास किया था।

उदाहरण : गायों की कतारें - इस कला में एक ग्वाले को गायों को चराने हेतु ले जाते दर्शाया गया है। गायों की आकृतियों की शैली लगभग ज्यामितीय है। पृष्ठभूमि में गेरू (लाल) तथा आकृतियों के लिए सफेद रंग का प्रयोग किया गया है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

3) भीमबेटका की शैलचित्रकला : इस गुफा में चित्रों के विषय विविध हैं। ये चित्र मध्य पाषाणकालीन शिकारी-संग्रहकर्ता आदिमानव द्वारा बनाए गए हैं। इसमें चित्रकारों ने मानव और पशुओं से उसके संबंधों का चित्रांकन किया है।

उदाहरण : योद्धा - इस चित्र में धनुष का चित्रण विशेष है, क्योंकि इससे पहले के चित्रों में इसका उल्लेख नहीं था। यह चित्र शैली आजकल महाराष्ट्र के वार्ली आदिवासी चित्रकारों द्वारा बनाई जाती है। चार पुरुष अलग-अलग पशुओं पर हमला कर रहे हैं और एक घोड़े को भी पकड़ने की कोशिश कर रहे हैं।

अथवा

टेम्परा शब्द से आप क्या समझते हैं? जामिनी रॉय द्वारा इस तकनीक में बनाई गई किसी एक पेंटिंग के बारे में लिखिए।

उत्तर – टेम्परा - टेम्परा एक चित्रकला की तकनीक है जिसमें रंगों को अंडे की जर्दी, पानी, या अन्य गोंद जैसे पदार्थों के साथ मिलाकर चित्रित किया जाता है। यह एक प्राचीन तकनीक है, जिसका उपयोग मुख्य रूप से पश्चिमी और भारतीय चित्रकला में किया गया है। इस तकनीक में रंग जल्दी सूख जाते हैं, जिससे कलाकार को कड़ी सीमा में काम करना पड़ता है। टेम्परा पेंटिंग में रंगों की चमक और स्पष्टता बहुत अधिक होती है, जो इसे विशिष्ट बनाती है।

जामिनी रॉय द्वारा टेम्परा तकनीक में बनाई गई "मदर एण्ड चाइल्ड" पेंटिंग का वर्णन :

- जामिनी राय ने अपनी निजी चित्रण-शैली विकसित की जो बंगाल की लोककला पर आधारित थी। वे अपने लिए मिट्टी के रंग स्वयं ही तैयार करते थे। सलेटी रंग के लिए वे नदी की गाद, लाल रंग के लिए सिन्दूर तथा सफ़ेद रंग के लिए चूने का प्रयोग करते थे। काला रंग वे काजल से तैयार कर प्रयोग में लाते थे।
- उनके चित्रों में रेखाओं का कम-से-कम प्रयोग, रेखांकन में अति सादगी तथा संयोजन ठोस है। उनके चित्रों में ग्राफिक क्वालिटी है और वे बहुत दिलचस्प हैं। उनमें आधुनिकता तथा परंपरा का एक लुभावना संयोजन है।
- गहरी मोटी बाह्य रेखाएँ, मछली के आकार की बड़ी-बड़ी आँखें, छोटा मुँह और नाक उनके चित्रों की अनूठी विशेषताएँ हैं। यह चित्र कैनवास पर टेंपरा तकनीक से बनाया गया है। इसमें माँ की सुडौल आकृति है। वह बाएँ हाथों में बच्चे को थामे चित्र के मध्य में बनाई गई है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 17. सिंधु घाटी सभ्यता में पाए गए मिट्टी के बर्तनों पर प्रयुक्त विभिन्न डिजाइनों और पैटर्नों के बारे में विस्तार से बताएं।

उत्तर – सिंधु घाटी सभ्यता के मिट्टी के बर्तनों पर पाए गए डिज़ाइनों और पैटर्नों का विवरण :

1) पशु चित्रण : सिंधु घाटी सभ्यता में पशुओं और पक्षियों का चित्रण भी बर्तनों पर व्यापक रूप से हुआ था। ये चित्र मुख्य रूप से धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व को दर्शाते थे।

उदाहरण : बर्तनों पर गाय, हाथी, मुर्गा, मछली और बकरियाँ आदि के चित्र मिलते हैं। यह दर्शाता है कि इन जानवरों का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान था।

2) ज्यामितिक मछली (मोटिफ़) चित्रित बर्तन : सिंधु घाटी के बर्तनों में प्याले, तश्तरी वाले बर्तन आदि सम्मिलित थे, जिन पर सुंदर ज्यामितिक पैटर्न और धारियाँ चित्रित की गई थीं। इस चित्रकारी में मछली का मोटिफ़ बनाया गया है, उस पर चित्रित त्रिभुजाकार रेखाओं वाले मछली पैटर्न को अत्यन्त सुन्दर ढंग से चित्रित किया गया है। मछली के शरीर के अन्दर त्रिभुजाकार काली रेखाओं से सजाया गया है।

3) शंकु-आकार या चोटीदार फैले किनारे के मुँहवाला मर्तबान : मछली के शल्क (अर्द्ध गोलाकार) के आकार में हैं। गोलाकार पैटर्न की पुनरावृत्ति से यह अनुमान होता है कि इन्हें धागे और तीली की सहायता से नर्म मिट्टी पर बनाया गया होगा।

4) मोर आकृति चित्रित भंडारण मर्तबान : हड़प्पाकालीन इस मर्तबान पर पंख फैलाए मोर पक्षी की बनाई गई है। आकृति मर्तबान की गर्दन एवं तली को घेरे समान मोटाई वाली काली रेखाएँ लयात्मक हैं।

अथवा

भारत में 'समकालीन कला' के विकास पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें। अपनी पसंद के किसी दो समकालीन कलाकारों के योगदान और उनकी कलाकृतियों के बारे में बताएँ।

उत्तर – भारत में 'समकालीन कला' के विकास:

भारत में समकालीन कला का विकास 20वीं सदी की शुरुआत से हुआ। इस समय कई कलाकारों ने भारतीय संस्कृति और पुराने महाकाव्यों (जैसे रामायण, महाभारत) से प्रेरित होकर नई तरह की चित्रकला बनाई। राजा रवि वर्मा ऐसे ही एक महान चित्रकार थे, जिन्होंने देवी-देवताओं के सुंदर चित्र बनाए।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- बंगाल के कुछ कलाकारों जैसे अवनींद्रनाथ टैगोर और नंदलाल बोस ने "बंगाल स्कूल" की शुरुआत की, जिसमें भारतीय परंपरा पर आधारित चित्र बनाए जाते थे।
- 1947 में 'प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप' शुरू हुआ, जिसमें एम. एफ. हुसैन, सैयद हैदर रज़ा और एफ. एन. सूजा जैसे कलाकार थे। इन्होंने भारतीय कला को आधुनिक रूप दिया।

समकालीन कलाकारों व उनकी कलाकृतियाँ :

1) एम. एफ. हुसैन

हुसैन ने कई अलग-अलग विषयों पर चित्र बनाए। उन्होंने ब्रिटिश राज, कोलकाता, बनारस, रोम और बीजिंग जैसे बड़े शहरों पर चित्र बनाए। साथ ही, उन्होंने महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्यों और मदर टेरेसा पर भी एक पूरी चित्रों की श्रृंखला बनाई। अपने चित्रों में उन्होंने सरल, गाढ़ी रेखाओं और चमकीले रंगों का प्रयोग किया हैं।

कलाकृति : नाद स्वरम् गणेश्यम्

इस चित्र में रंग-बिरंगे दो सिर वाले गणेश दिखाए गए हैं। वे एक हाथ से वाद्ययंत्र बजा रहे हैं और दूसरे से मोदक या चाँद उछाल रहे हैं। उनकी एक भुजा पीले रंग से और दूसरी लाल रंग से रंगी गई है। सफेद धोती और गहरे रंगों का प्रयोग चित्र को खास बनाता है।

2) के. के. हेब्बार

के. के. हेब्बार ने भारतीय ग्रामीण जीवन, भूदृश्य और नृत्य को अपनी चित्रकला का विषय बनाया। उन्होंने अपने चित्रों में मानव-आकृतियों को भारतीय रूप-रंग से सजाया है। हेब्बार की चित्रण-शैली प्रभाववादी एवं अभिव्यंजनावादी तकनीक का अदभुत सम्मिश्रण है। उनके चित्रों में भारतीय जीवन की सादगी, रंगों का सुंदर प्रयोग और सामाजिक सरोकार साफ दिखाई देते हैं।

कलाकृति : शीर्षकविहीन

के. के. हेब्बार ने इस चित्र में केरल के तटीय नगर का चित्रण किया हैं। सामने की ओर मछुआरे और उनकी नावें दिखाई गई हैं, और पीछे की ओर उनकी झोपड़ियाँ बनी हुई हैं। सुबह की हलचल और वातावरण को दर्शाने के लिए पीला, नीला, भूरा जैसे रंगों का बुद्धिमानी से प्रयोग किया गया है। इसमें रंगों की पारदर्शिता आकर्षक है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

Thank you!

We hope you found this material helpful. We wish you the very best for your examination.

Strive for Excellence – Your Path to Success